ने अवध के शासक अमीन खाँ को भेजा जिसके असफल हो जाने पर कत्ल करवा दिया और तिमिर के नेतृत्व में दूसरी सेना भेजी गई इसकी भी वही दशा हुई फिर तीसरी सेना भेजी गई वह भी असफल होकर लौट आया। इस स्थिति में बलवन अत्यंत क्रोधित होकर स्वयं दो लाख फौज और अपने दूसरा पुत्र बुगरा खाँ को लेकर लखनौती की तरफ कूच किया लेकिन बाद में उसे पकड़ लिया गया। बर्नी का कथन है कि "बाजार के दोनों ओर दो मील लम्बी सड़क पर तुगरिल के साथियों को कील से ठोक कर गाड़ दिया गया जिसे देखने वाले तक मुर्छित हो गए थे। बलवन ने बुगरा खाँ को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया।

मंगोल आक्रमण :—

बलवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य मंगोलो के विरुद्ध कारवाई करना था। दिल्ली सलतनत के लिए मंगोल सबसे बड़ा खतरा था। मंगोल ने उत्तर पश्चिमी सीमा तथा लाहौर पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया था जिससे सिंध तथा मुल्तान के प्रांतों पर मंगोलो के आक्रमण का भय सदैव लगा रहता था। बलवन इस खतरे को रोकने के लिए ठोस कदम उठाया। सबसे पहले सीमाओं को सुदृढ़ करने के लिए किला बनवाया, बलिष्ठ योद्धा तथा अफगान सैनिकों को नियुक्त किया। समस्त प्रदेश की पराक्रमी योद्धा शेर खाँ के अधिकार में सौंपा गया जहाँ उसके आतंक से मंगोल भय खाते थे। शेर खाँ की मृत्यु के पश्चात् इसने इस प्रदेश को दो भागों में बाँट दिया। मुल्तान सिंध तथा लाहौर सबसे बड़े लड़के मुहम्मद खाँ को सौंपा गया। ~~तथा~~ ~~सुनि~~ मुहम्मद खाँ योग्य सैनिक था उसने मंगोलो की प्रगति को रोका परन्तु 1286 ई० में मंगोलों ने मुहम्मद खाँ को मार डाला। जिससे बलवन को बहुत धक्का पहुँचा। फिर भी वह मंगोलों के विरुद्ध कार्रवाई करता रहा तथा इस खतरे को रोकता रहा

परन्तु अपने पुत्र की मृत्यु के शोक का सहन वह नहीं कर सका और 80 वर्ष की अवस्था में 1287 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

बलबन का राजस्व सिद्धान्त और शासन प्रबंध :-

सिंहासन पर बैठते ही बलबन ने यह अनुभव किया था कि तुर्क अमीरों के कारण सुल्तान की शक्ति तथा स्थिति गिर गयी थी। प्रजा के हृदय में न तो सुल्तान के लिए भय था और न श्रद्धा जबकि भय अनुशासन का आधार और राज्य के यश तथा वैभव का उद्गम था। अतः बलबन ने अपनी निजी प्रतिष्ठा को बढ़ाया। राज्य की पूर्ण शक्ति बलबन के हाथों में केन्द्रीत थी। यद्यपि सैनिक पदाधिकारियों को नियुक्त किया गया था फिर भी राज्य के कार्यों को वह स्वयं करता था, स्वयं वह निरंकुश और स्वेच्छाचारी शासक था।

गुप्तचर विभाग :-

राजधानी और प्रांतों में होने वाली सभी घटनाओं एवं षड़यंत्रों तथा विद्रोहियों का पता लगाने के लिये उसने गुप्तचर विभाग का गठन किया तथा उस पर सबसे अधिक धन व्यय किया। प्रत्येक जिला में गुप्त संवाददाता नियुक्त किया गया जो गवर्नर तथा सेनानायकों से मुक्त होता था और उसे अच्छा वेतन दिया जाता था। अपने कर्तव्यों का पालन न करने पर उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। इस प्रकार यह विभाग उसके शासन की दृढ़ आधार थी।

सेना का प्रबंध :-

निरंकुश शासन का आधार शक्तिशाली सेना होती है। अतः बलबन ने इसके पुनर्गठन पर ज्यादा जोर दिया। कुतुबुद्दीन तथा इल्तुतमिश के जमाने में सैनिकों को भूमिकर का कुछ भाग तथा जागीर दी जाती थी परन्तु इसका दोष यह था कि सेना का उत्तराधिकारी भी इसका पुनः उपयोग न करता था चाहे वे सैनिक सेवा करे या न करे।

(मुल्क) बलबन ने जागीरदारी की जाँच करवायी तथा उनसे उनकी जागीर लेकर उन्हें नकद पेंशन दे दिया गया। जो लोग सैनिक सेवा के योग्य थे, उनकी जमीन नहीं छीना गया तथा जागीरदारों को नकद वेतन दिया। और एक इमादुल मुल्क को बलबन ने सेनापति बना दिया। इमादुल मुल्क ने सैनिक अनुशासन स्थापित किया, सेना को शक्तिशाली बनाया उसकी भर्ती, वेतन और पोशाक की समुचित व्यवस्था की गई। इन सब बातों का प्रभाव यह हुआ कि सेना पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो गई।

न्याय प्रबंध :-

बलवन अत्यंत न्यायी था और उसका निर्णय निष्पक्ष होता था। दण्ड में उसने सम्बन्धियों मित्रों और शत्रुओं में कोई भेद नहीं समझा। एक बार उसके दरबारी अमीर ने एक नौकर को मार डाला, उसकी विधवा पत्नी ने न्याय के लिए प्रार्थना की तो बलवन ने उस स्त्री के समाने ही उस अमीर को कड़ी कोड़े लगवाया था। विद्रोहियों, अपराधियों तथा सैन्य विद्रोहियों को कठोर दण्ड देने में वह कभी नहीं चूका था।

निष्कर्ष

बलवन ने सल्तनता की बागडोर नायक तथा शासक के रूप में चालीस वर्ष तक संभाली। वह अत्यंत धार्मिक व्यक्ति था, वह पक्का सुन्नी मुसलमान था और इस्लाम के नियमों को सावधानी से पालन करता था। उसका दरबार विद्या तथा संस्कृति का केन्द्र था। स्थापत्य कला में उसे पूर्ण रुचि थी। तुर्की नस्ल की श्रेष्ठता में उसे इतना विश्वास था कि वह साधारण व्यक्ति से बातचीत करना अपनी शान के विरुद्ध समझता था।

80 वर्ष (1287)